विज्ञान दोहे

ओम वर्मा

• पर्यावरण
गर यूँ ही कटते रहे, पीपल और पलाश।
तय है फिर यह जान लें, पर्यावरण विनाश।।01।।

• प्रदूषण
नभ, धरती, आकाश में, क्यूँ कचरे का ढेर।
जागे हैं हम देर से, पर न करें अंधेर।।02।।

• प्रदूषण
उत्पादन में हो कमी, कर लेना स्वीकार।
बढ़े प्रदूषण साथ तो, कर देना इंकार।।03।।

• प्रदूषण
जैविक विधि से कीजिए, कचरे का निपटान।
चूके तो समझो हुआ, जीवन कब्रिस्तान।।04।।

• जल का महत्व
उतना ही जल वापरें, जितने में हो काम।
नहीं मिलेगा बाद में, चाहे जो दो दाम।।05।।

• जल प्रदूषण
जल में डूबी मूर्तियाँ, करती हैं चीत्कार।
ताल नदी अरू पोखरों, का है बंटाधार।।06।।

• प्रकृति का दोहन
पूरी कर सकती धरा, हम सबकी सब नीड।
पर कैसे पूरा करे, मन का बढ़ता ग्रीड।।07।।

• हरियाली का महत्व
हरियाली जिस ओर है, खुशहाली तहँ आप।
हरे पेड़ को काटना, गौहत्या सा पाप।।08।।

• ओज़ोन रिंग का महत्व
छतरी में ओजोन की, कर डाला है छेद।
रोकें इसका फैलना, सभी बिना मतभेद।।09।।

• वर्षा की कमी
छेड़-छाड़ अब छोड़ दें, सुन कुदरत की बात।
वर्ना पानी की जगह, विष देगी बरसात।।10।।

• जैविक खाद
रसायनों की खाद से, अच्छी जैविक खाद।
समझ लिया यह सत्य तो, फसलें देंगी स्वाद।।11।।

• अंतरिक्ष में प्रदूषण
ध्वज फहराया व्योम में, पर देखो अंधेर।
वहीं लगा कर आ गए, कूड़ा-करकट का ढेर।।12।।

• वृक्षों का महत्व
प्राणवायु को भूलकर, पेड़ों का उपकार।
जन्म मृत्यु हर काम में, किया पेड़ पर वार।।13।।

• प्लास्टिक और प्रदूषण
प्लास्टिक वाली थैलियों, का कम हो उपयोग।
इससे रुकती नालियाँ, गायों में हो रोग।।14।।

• टीकाकरण
टीके लगवाने से मिले, कई रोग से मुक्ति।
जेनर ने की खोज यह, टीकों में है शक्ति।।15।।

• विटामिनों का वर्गीकरण
कुछ को घोलें चर्बियाँ, कुछ को घोले नीर।
विटामिनों की बस यही, होती है तासीर।।16।।

• विटामिनों की कमी
विटामिनों की अल्पता, फैलाती है रोग।
हो दैनिक आहार में, इनका भी उपयोग।।17।।

• विटामिन 'A'
सबसे पहला, 'ए' रखा नाम है रेटिनॉल।
कर देती इसकी कमी, आँखों को बेहाल।।18।।

• विटामिन 'D'
जिसकी कमियाँ, हड्डियाँ, कर देतीं कमजोर।
पाया उसने नाम डी, रवि बाँटे हर ओर।।19।।

• विटामिन 'C'
जिसके होने से बढ़े, रोगों का प्रतिरोध।
पाया उसने नाम सी, यूँ कहते हैं शोध।।20।।

• एनीमिया
लौह तत्व की हो कमी, होता पतला रक्त।
गर्भवती सब नारियाँ, करें न ज़ाया वक्त।।21।।

• प्रिंटिंग मशीन के आविष्कारक गुटनबर्ग
नोट और अखबार हम, छाप रहे हैं रोज।
लेकिन है यह जान लें, गुटनबर्ग की खोज।।22।।

• क्रिया-प्रतिक्रिया : न्यूटन का तीसरा नियम
क्रिया की प्रतिक्रिया, होती सदा हुजूर।
बतलाकर न्यूटन कभी, हैं जग में मशहूर।।23।।

• sin/costan त्रिकोणमिति
'साइन' में यदि 'कॉस' का, भाग दिया श्रीमान।
मान मिलेगा 'टेन' का, ज्यामिति की जान।।24।।

संपर्क सूत्र :
श्री ओम वर्मा, 100, रामनगर एक्सटेंशन, देवास-455001 (म.प्र.) [ई-मेल : om.varma17@gmail.com]

वैज्ञानिक नारे

रवीन्द्र कुमार पाठक

• **विज्ञान का महत्त्व**
मानव का सबविध कल्याण,
कर सकता है बस विज्ञान।

• **विज्ञान और मानव-प्रेम**
एक समान सभी में प्राण, चाहे हो कोई इन्सान।
गाएँ प्रेम-भरा यह गान, यही सिखाता है विज्ञान।।
हो सब में वैज्ञानिक बोध,
भेदभाव का करें विरोध।
समझें 'जैसे धरती एक,
वैसे एक बनें हम नेक।।
आपस में जुड़ने का लो प्रण,
पढ़ सिद्धान्त गुरुत्वाकर्षण।

• **बालिका-रक्षा हेतु विज्ञान**
जन्म एक सा, एक सी जान, पुत्री बिल्कुल पुत्र समान।
लो न गर्भ में उसके प्राण, कभी न यह कहता विज्ञान।।

• **जैवविविधता : महत्व और उसकी रक्षा**
धरती पर हैं जीव अनेक।
सब से जुड़ें, बनें हम नेक।।
जीवन के हैं विविध प्रकार,
जल-थल-नभ सब में संचार।
सब का आपस में सम्बन्ध,
रक्षा के हित करें प्रबन्ध।।
कीट-वर्ग जब करे परागण,
फल-अनाज का हो उत्पादन।
कीड़ों का जो होगा नाश,
टूटेगी भोजन की आश।।
चिड़ियों की हत्याएँ रोक,
कलरव से भर दो गृह-लोक।
विविध पेड़, प्राणी बहुरूप,
खिली हुई जीवन की धूप।
नष्ट एक भी हो, तो डगमग
हो जाएगा सतरंगा जग।।
शेष जीव का कर अवसान,
भू पर बढ़ें सिर्फ इन्सान।
घायल धरती का हर अंग,
दुनिया हो जाए बदरंग।

• **विज्ञान के विविध अनुप्रयोग**
जहाँ नज़र डालें हम लोग,
दिखे साइन्स-थ्योरी उपयोग।

एरोप्लेन, फोन या रेल, टी.वी., नेट साइन्स के खेल।
इन्सानों की मिटती दूरी, खत्म हो गयी हर मजबूरी।।
जहाँ-जहाँ जीवन का योग,
करें साइन्स विधि का उपयोग।
कृषि-उद्योग-दूरसंचार,
यातायात में करें सुधार।।

• **कृषि में विज्ञान**
साइन्स कृषक से हो नजदीक,
उन्नत हो खेती-तकनीक।

• **गृह विज्ञान**
चूल्हा-चौका, शिशु का पालन।
स्वच्छ रहे घर का संचालन।।
सब नर-नारी को यह ज्ञान।
हो पढ़ कर के गृह-विज्ञान।।

• **जीवन : समस्याएँ और विज्ञान**
रहे न पुस्तक में विज्ञान,
जीवन में हो उसका स्थान।
पोंगापंथ-गरीबी-रोग,
नष्ट करे विज्ञान-प्रयोग।
जब चमके विज्ञान सितारा,
मिट जाए मन का अंधियारा।
छुआछूत, रोग, हर कष्ट,
निर्धनता हो जाए विनष्ट।।
लेकर यह विज्ञान-मशाल,
जला अन्धविश्वासी जाल।
उससे जीवन-दीप जलाओ,
नहीं किसी घर आग लगाओ।।

• **ब्रह्माण्ड विद्या**
जानें हम यह विश्व अपार,
चलो चलें तारों के पार।
ले दूरबीन देख आकाश,
पाओ तारे अपने पास।
समझो उनका जन्म-विकास,
ज्ञान-वृद्धि का करो प्रयास।।

• **अन्तरिक्ष बस्ती**
धरती पर जो इतनी भीड़,
अन्तरिक्ष में ढूँढ़ो नीड़।
चलो चाँद पर डालें डेरा,
इन्सानों का बने बसेरा।।

संपर्क सूत्र :
श्री रवीन्द्र कुमार पाठक, ग्राम-पाठक विगहा, पो.-जम्होर, जिला-औरंगाबाद 824121 (बिहार), [मो. : 09801091682; ई-मेल : rkpathakaubr@gmail.com]